पहला अध्याय

उपेंद्रनाथ 'अश्क' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

उपेंद्रनाथ 'अश्क' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अश्क जी आज हम लोगों में नहीं हैं, मगर उनका अक्षय कीर्तिमान सृजनात्मक साहित्य हमारे बीच सदा से आकर्षण बनकर रहा है। हिंदी साहित्य की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देने की दृष्टि से उनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय रहेगा। अश्क जी के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण तथा रेखाचित्र बहुसंख्य कृतियाँ उपलब्ध हैं। साथ-ही-साथ अनेक स्फुट रचनाएँ तथा उनके सम्यक साहित्य का मूल्यांकन करने की दिशा में प्रस्तुत की गई अधिकांश आलोचनात्मक निबंधों के रूप में समय-समय पर हिंदी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। अश्क जी अपने दैनिक जीवन में मिलनसार, सौम्य, मधुरभाषी, उदारचेतना एवं विषम पारिवारिक परिस्थितियों के होते हुए भी उनके होठों पर सदैव मंद मुस्कान रहती थी।

बचपन से ही घर में कलह और अत्यधिक बीमारी ग्रस्त रहने के फलस्वरूप नियमित रूप से अध्ययन करने में असमर्थ रहे। फिर भी विघ्न एवं बीमारी के उपरांत भी अश्क जी को एक अभूतपूर्व शक्ति का आभास होता है। लेखन प्रेरणा उन्हें अपने आस-पास का कलुषित वातावरण और उनकी अतिभ्रमण सहानुभूति के फलस्वरूप हुई। अश्क जी को कारयित्री प्रतिभा जन्मजात प्राप्त हुई थी। उन्होंने साहित्य के विभिन्न अंगों पर लेखन कर एक महान साहित्यकार के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ दी है। अपना लेखन कार्य उर्दू से आरंभ कर दिया था मगर प्रेमचंद आदि के लोगों के सानिध्य में आकर और उनसे प्रेरणा पाकर हिंदी में लेखन किया।

साहित्य को जानने के लिए साहित्यकार के जीवन का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। साहित्यकार कितना भी तटस्थ रहना चाहे पर उनके जीवन का कुछ-ना-कुछ अंश उनके साहित्य में जरूर आता है। अश्क जी भी इसके लिए अपवाद नहीं रहे हैं। पारिवारिक झगड़े, परिस्थितियों की निकटता तथा समाज के जुल्म आदि उन्होंने अपने साहित्य का विषय बनाया है। अश्क जी मध्य वर्ग विशेषत: निम्न वर्ग के जीवन का चित्रण करने में कुशल हैं। शिवपूजन सहाय

उनके साहित्य के बारे में लिखते हैं - "जब वे साहित्य की रचना करते हैं तब उनकी प्रतिज्ञा सदा जनता के जीवन और मनोभाव की अनुगामिनी रहती है।"[1]

उनके पूरे साहित्य में हमें मध्यवर्गीय समाज का प्रतिबिंब नजर आता है। उन्होंने मध्य वर्ग की समस्याओं को हमदर्दी से समझा, परखा और अपने साहित्य में उजागर किया। अतः अश्क जी का जीवन परिचय आवश्यक है।

1.1 जीवन परिचय -

1.1.1 जन्म -

अश्क जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर नामक नगर में 14 दिसंबर, 1910 को हुआ। अश्क भारद्वाज गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। उनका जन्म नाम इंद्रनारायण था, पर उनके पिता को यह पसंद नहीं आया और उन्हें पूर्वनिश्चयानुसार उनका नाम उपेंद्रनाथ रखा। वे छः भाईयों में दूसरे थे।

1.1.2 बचपन -

अश्क जी का बचपन दुःखमय और पारिवारिक कलहपूर्ण वातावरण में बीता। अश्क के पिता पं. माधोराम स्टेशन मास्टर थे। उन्हें शराब पीने और हार से बेपरवाह रहने की आदत थी। राजेंद्रसिंह बेदी उनके पिता के बारे में कहते हैं - "वे घर की ओर रूख भी करते तो डाँट-फटकार और मारपीट के लिए बीवी से लड़ रहे हैं। उस पर गरज रहे हैं, या कि बच्चे को उल्टा लटकाकर उसे बेदर्दी से पीट रहे हैं।"[2]

इन सबके बावजूद अश्क अपनी तरक्की में पिता की सलाह महत्त्वपूर्ण मानते थे। कोई भी काम करना है तो उसमें कमाल तक पहुँच जाना चाहिए ऐसा उनका कहना था किसी भी कार्य में एकनिष्ठ होकर जुट जाने की सलाह वे हमेशा देते थे। इसी कारण पिता ने दी हुई जीवनसृष्टि उन्हें कामयाब बनाने में अधिक सहायक हुई। श्रीमती वाजिदा तबस्सुम को दिए गए साक्षात्कार में अश्क जी अपने पिता के बारे में कहते हैं- "खुद तो कुछ भी नहीं कर पाए, लेकिन मुझे बना गए। ....यह जो मैं बार-बार लिखता हूँ, ...मेहनत करता हूँ, उन्हीं की नसीहत के कारण।"[3]

पिता के विपरीत अश्क जी की माँ, गाय जैसी प्रकृतिवाली एक सीधी और पतिव्रता नारी थी। अपना कर्तव्य निभाकर अश्क के बचपन को सँवारने में उनकी माँ भी सहायक हुई है। इसी तरह अश्क जी का बचपन गरीबी और मुसिबतों का सामना करते हुए अत्यंत साधारण परिवार में बीता। अश्क जी की माता का नाम वसंती देवी था।

इन तमाम विरोधोभासों के बावजूद अश्क जी पर उनके माता-पिता का गहरा प्रभाव पड़ा और उनके जीवन में दोनों सहायक हुए हैं। उन्हें अपनी माँ से लोह इच्छा शक्ति एवं नैतिकता मिली थी और पिता से जीवन के अमूल्यसूत्र - 'किसी भी कार्य में एकनिष्ठ होकर जुट जाना और उसके कमाल तक पहुँच जाना' को आत्मगत किया था। जिन्हें वे अपनी जिंदगी भर नही भूल पाये। यही प्रेरणा है कि जो अश्क जी को जिंदगी में कुछ कर दिखाने के लिए उकसाती रही है।

1.1.3 शिक्षा -

अश्क जी बचपन से ही एक प्रतिशाली व्यक्ति थे। बचपन में स्कूल जाने से पहले उन्होंने अपने पिता से घर पर ही शिक्षा प्राप्त की। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें संस्कृत के श्लोक कंठस्थ थे। आठ वर्ष की आयु तक अश्क जी अपने पिता के साथ हिसार, सेलाखुर्द और बगवान आदि स्टेशनों पर घूमते रहे।

सन् 1919 में जालंधर की एक पाठशाला में उन्होंने तीसरी कक्षा में प्रवेश लिया। सन् 1926 में उनकी 'तूफाने अश्क' ये पद्यरचना पहली बार प्रकाशित हुई। सन् 1926 में अश्क जी मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए। सन् 1931 तक उनकी कुछ गजले तथा कहानी संग्रह प्रकाशित हो गए। सन् 1931 में बी. ए. की परीक्षा वे तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए। जीविकोपार्जन की समस्या के कारण बी. ए. पास होते ही उन्होंने स्कूल में अध्यापक की नौकरी की। कुछ दिनों के बाद वे प्रसिद्ध उर्दू कवि श्री. मेलाराम वफा के साथ लाहोर चले गए।

सन् 1933 में अश्क जी ने 'ऊँचाल' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन किया। साप्ताहिक 'गुरु घंटाल' के लिए वे प्रति सप्ताह एक रुपए में एक कहानी लिखकर दिया करते थे। सन् 1934 में अश्क जी ने लॉ कॉलेज में प्रवेश लिया। इसी बीच उनकी पहली पत्नी शीला

टी. बी. से बीमार हो गई, फिर भी अथक परिश्रम से सन् 1936 में अश्क जी एल. एल. बी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो गए। सात सौ छात्रों में वे सातवे नंबर पर थे। आगे उनकी पत्नी शीला का 11 दिसंबर, 1936 को देहांत हो गया और उनका जज बनने का सारा उत्साह चला गया। अश्क जी ने कानून की सब किताबें बेच डाली और वे स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन करने लगे।

1.1.4 विवाह -

अश्क जी का पहला विवाह सन् 1932 में शीलादेवी के साथ हुआ। उनकी पत्नी गेहुएँ रंग की, हमेशा खिलखिलाकर हँसनेवाली, ग्रामीण और अशिक्षित लड़की थी। चार वर्ष के सहचर्य से अश्क जी उसे बहुत चाहने लगे थे। परंतु नियती को शायद ये मंजूर नहीं था। अचानक वह यक्ष्मा से ग्रस्त हो गई। अश्क ने अथक परिश्रम से उसकी बहुत सेवा की, पर 11 दिसंबर, 1936 को वह पति और बेटा उमेश को छोड़कर सदा के लिए चल बसी। राजेंद्रसिंह बेदी के साथ हुए वार्तालाप के समय अश्क जी एक कविता कहते हैं -

> ''चल दोगी कुटिया सुनी कर
> इसी घड़ी इस थाम
> युग-युग तक जलते रहने का
> मुझे सौंप कर काम।''[4]

कविता में इन पंक्तियों से उनका पत्नी के प्रति प्रेम प्रेकट हो जाता है। पत्नी की मृत्यु के बाद निराश होकर वे साहित्य सृजन करने लगे। उन्होंने चार-पाँच वर्ष तक शादी नहीं की। समाज की लांछना ने उनका पीछा नहीं छोड़ा और तंग आकर उन्होंने बड़े भाई को शादी करने के लिए खत लिखा। उनके भाई ने दूर के रिश्ते में उनकी शादी पक्की कर दी। शांत होने पर वे जान गए कि उनसे गलती हो गई है। सगाई तोड़ने के लिए उन्होंने भाई को खत लिखा। ऐसी विचित्र स्थिति में अश्क जी का कौशल्या से परिचय हुआ। अश्क जी चाहते थे कि कौशल्या से वे चुपचाप शादी करेंगे तो भाई द्वारा पक्की की शादी टूट जाएगी, पर कौशल्या जी ने इस बात के लिए विरोध किया। इसी असंमजस की स्थिति फरवरी, 1941 में अश्क जी ने माया से अनिच्छापूर्वक दूसरी

शादी की। दूसरी पत्नी के साथ अश्क जी की नहीं बन सकी। एक महिने के दिखावटी जीवन से अश्क जी ऊब गए और उन्होंने दूसरी पत्नी का त्याग कर 12 सितंबर, 1941 को कौशल्याजी से तीसरा विवाह किया।

अश्क जी सन् 1946 में ह्रदयरोग से ग्रस्त हो गए तब कौशल्याजी उन्हें मौत के मुँह से बचाकर वापस लाने में सफल हो गई। अश्क जीवन में अनेक मुसीबतों को झेलते हुए वे थक गए। ऐसी स्थिति में उनकी तीसरी पत्नी कौशल्या ने उन्हें सहारा दिया। आर्थिक, सामाजिक और साहित्यिक संघर्ष से जिस चोटी पर अश्क जी पहुँच गए थे, उनमें कौशल्याजी के प्रयत्नों का हिस्सा अधिक है। रवींद्र श्रीवास्तव के साक्षात्कार को उत्तर देते वक्त अश्क जी कौशल्या के बारे में कहते हैं - ''पत्नी बहुत पढ़ी-लिखी, समझदार, प्रबल इच्छा शक्तिवाली... निकली।''[5]

अश्क जी केंद्रीय सरकार से ऋण लेकर सन् 1949 में उन्होंने 'नीलाभ प्रकाशन' की स्थापना की। आज हम 'नीलाभ प्रकाशन' को लोकप्रियता की जिस ऊँचाई पर देखते हैं वह सब कौशल्याजी के प्रयत्नों का फल है। कौशल्याजी सच्चे अर्थ में अश्क जी की सहायक, साथी, सहयोगी मित्र, प्रेमिका, प्रशंसक, आलोचक और सफल पत्नी के रूप में हमारे सामने आती हैं।

अश्क जी के जीवन में कौशल्या सुख और दुःख दोनों स्थितियों में उन्होंने अश्क जी का साथ निभाया है। समय-समय पर कौशल्याजी ने अश्क जी की संगिनी बनकर पति सेवा की है। बीमारी के दिनों माता बनकर सेवा की है, मित्र बनकर सलाह दी है, प्रेरणा बनकर शक्ति प्रदान की है, उनके पथ की सहायक साथी बनी है।

1.1.5 जीवन संघर्ष -

बचपन से अश्क जी का जीवन संघर्षमय रहा है। शिक्षा, स्वास्थ्य, जीविका, आर्थिक, घर तथा साहित्य सभी जगह उन्हें संघर्ष करना पड़ा है। बचपन से ही वे रोजी-रोटी के लिए काम करते थे।

कई बार फीस के लिए तथा किताबों के लिए उनके पास पैसे नहीं थे। रवींद्र श्रीवास्तव जी के प्रश्न को उत्तर देते हुए अश्क जी कहते हैं - ''मैंने हमेशा पुस्तक विक्रेताओं से

दोस्ती बनाए रखी और दूकानों के पिछले हिस्सों में बैठकर अध्ययन किया, ...मैट्रिक तक नंगे पाँव स्कूल जाता रहा। दुर्बल स्वास्थ्य के बावजूद एक बरस तक तीन साड़े-तीन मील पैदल-चलकर कॉलेज जाता रहा हूँ।''[6] बी. ए. करने के बाद कुछ दिनों तक अध्यापक काम करते रहे। जरूरत पड़ने पर उन्होंने अखबार बेचे, विज्ञापन बाँटे इतना ही नहीं, एल. एल. बी. होने के बाद भी भाई के दुकान में झाडू लगाया है। भैरवप्रसाद गुप्त उनके बारे में कहते हैं कि अश्क आप से साफ-साफ कह देंगे कि - ''उनकी कल्पना वैसी प्रखर नहीं मूड़ के गुलाम नहीं, कोई दैवी हाथ उनकी कलम नहीं चलता और जन्मजात प्रतिभा उनमें थी नहीं। जीवन भर उन्होंने संघर्ष किया है... और स्वयं ही हाथ-पाँव मारकर उन्होंने तैरना सीखा है।''[7]

सन् 1935 में जब डॉक्टरों ने उनकी पहली पत्नी शीला को यक्ष्मा है, ऐसा संदेह प्रकट किया तब भी अश्क जी ने हार नहीं मानी। उन्होंने पत्नी को शहर से दूर गुलाबदेवी अस्पताल में भरती करा दिया। तब वे कानून की पढ़ाई करते थे। दिनभर साहित्यिक काम, कॉलेज की पढ़ाई, ट्यूशन लेते और रात को अध्ययन-मनन करते थे। हप्ते में दो-तीन बार पत्नी से मिलने भी जाते थे। इतने श्रम और तपस्या के उपरांत भी पत्नी का देहांत हो गया। परंतु अंत तक परिस्थिति से लड़ते रहे।

जनवरी, 1945 में अश्क बंबई चले गए और वहाँ उन्होंने फिल्मों के लिए संवाद लिखने का काम किया। नीति बोस की फिल्म 'मजदूर', अशोक कुमार की फिल्म 'आठ दिन' में उन्होंने अभिनय किया। बचपन की अभिलाषा कुछ हद तक सफल जरूर हुई परंतु वास्तविकता के कटु अनुभवों के कारण उन्होंने बंबई को छोड़ दिया। वहाँ से निकलते ही दिसंबर, 1946 में उन्हें यक्ष्मा हो गया। जल्द ही उनकी पत्नी कौशल्याने उन्हें पंचगनी के सेनेटोरियम में भरती किया। उन दिनों में टी. बी. का खास इलाज नहीं था। फिर भी अश्क जी ने जिद नहीं छोड़ी, वे निरंतर साहित्य सृजन करते रहे। कमजोर होते हुए भी अपने रोग से दाँत पीसकर वे कहते थे - ''साले मैं तुम्हें हराकर दम लूँगा, ...मैं तेरा तिया पाँचा कर दूँगा, मुझे मारना आसान नहीं।''[8] बीमारी की दशा में सेनेटोरियम में होते हुए भी अश्क जी ने 'तूफान से पहले' यह एकांकी संग्रह तथा 'दीप जलेगा' ये लंबी कविता लिखी। बीमारी में भी वे रूकना नहीं जानते थे। लिखना उनका व्यसन बन

चुका था। उनका लक्ष्य के मार्ग में बीमारी को भी उन्होंने बाधा के बजाय सुविधा के रूप में ग्रहण किया, क्योंकि निराशा के क्षणों में भी वे निरंतर साहित्य सृजन करते रहे। अश्क जी को मौत के मुँह में भी हँसता देखकर बलवंतसिंह को अज्ञात जी का एक शेर याद आता है -

''एक टूटे से मकबरे के करीबर, एक हसी जूए-बार बहती है
मौत कितना ही एतराज करे, जिंदगी बेकरार रहती है।''[9]

इस शेर का अर्थ भी उन्होंने इस प्रकार बताया है कि पुरानी और टूटी हुई समाधी के निकट एक नन्हीं सी तड़पती हुई नदी बह रही है। चाहे मौत कैसे भी अपनी डरावनी आँखे, चमकाये, जिंदगी उस नन्हीं नदी की तरह खिलखिलाती, कुल्हे मटकाती और नृत्य करती आगे बढ़ती जाती है। उस नदी की तरह अश्क जी ने भी आखिर मौत पर विजय पायी। अर्ध स्वस्थ होकर वे फिर इलाहाबाद में गए।

सन् 1948 से 1953 तक का काल अश्क जी के लिए दंपत्ति-जीवन की सृष्टि से बड़ा संघर्ष का रहा है। सारा रुपया बीमारी में खत्म होने और अश्क जी स्वयं किसी नौकरी के योग्य न रहने के कारण उन्हें अनेक लोगों से आर्थिक मदद लेनी पड़ी। उनकी बीमारी के दिन निराशादायी, विफलता से भरे और अस्वस्थतापूर्ण होते हुए भी एक कृतिकार के लिए सुवर्ण दिन साबित हुई है। इसीलिए श्री निर्मलचंद्र श्रीवास्तव लिखते हैं - ''1947-1948 का काल, जहाँ एक ओर अश्क जी की घोर अस्वस्थता का काल है, वहाँ उनके सृजन की उर्वरता का भी स्वर्ण समय है।''[10]

उनकी पत्नी कौशल्या ने सन् 1949 में उत्तर प्रदेश तथा भारत सरकार से ब्याज पर ऋण लेकर 'नीलाभ प्रकाशन' की स्थापना की। बीमारी के बाद जब उनका दाया फेफड़ा कमजोर था तभ भी घर का खर्च चलाने के लिए रेड़िओ आदि के लिए काम भी करते थे। एक मिनट भी खाली नहीं जाने देते थे। इसी तरह अपने संघर्षमय जीवन में आये अनेक संकटों को झेलकर और परिस्थितियों का सामना करते हुए 'नीलाभ प्रकाशन' आज बहुत ऊँचाई पर पहुँच गया है। उसमें उनकी पत्नी कौशल्या अपने ही प्रकाशन-गृह से हो, यह अश्क जी का सपना भी 'नीलाभ प्रकाशन गृह' से पूरा हो गया।

उन्होंने जीवन के दु:खों को हँसते हुए सहा। गोपाल प्रसाद व्यास उनके बारे में कहते हैं - ''जो वेदना को पी सकता है, वही हँस सकता है। जो जीवन के प्रति, उसके मूल्यों के प्रति गंभीर वही व्यवहार में हल्का-फुल्का हो सकता है। हिंदी में इसकी एक मिसाल महादेवी है और दूसरी उपेंद्रनाथ अश्क।''[11]

बीमारी के बाद भी अश्क जी ने रोजी-रोटी के लिए काम किया है। वे एक मिनट भी खाली नहीं जाने देते थे। अपने संघर्षमय जीवन में आए अनेक संकटों को झेलकर और परिस्थितियों का सामना करते हुए उन्होंने 'नीलाभ प्रकाशन' को ऊँचाई पर पहुँचाया है।

1.1.6 सेहतमंद मरीज -

सन् 1924 में अश्क जी आठवीं कक्षा में पढ़ते थे, तब वे कई महिने बीमार थे। डॉक्टरों के जलवायु बदलने का परामर्श देने के कारण उनके पिता उन्हें पंजाब के 'दसुआ' गाँव ले गए। उनकी कनपटी के ऊपर पीड़ा का भार और सिर दर्द होते हुए भी वे रात भर दाँते पीसे, दम साधे, कनपटी दबाए नाटक देखते रहे। एक बार तबीयत ठीक न होते हुए भी अश्क जी अपने पिता के साथ दो मील पैदल नाटक देखने चले गए।

सन् 1946 की यक्ष्मा बीमारी से अश्क जी सन् 1948 में चाहे पूरी तरह निगेटिव हो गए, लेकिन दायाँ फेफड़ा बंद होने से श्रम का काम करना उनके लिए कठिन था। हर छ: महिने में उन्हें इंजेक्शन लेने पड़ते थे।

1952 में अश्क जी फिर से सख्त बीमार पड़ गए। कुछ अजीब सी खाँसी आती थी, साँस रूक जाती थी, नाक से 'कीं-कीं' सी आवाज आती थी, बदन पसीने से तर और रात की नींद हराम हो जाती थी। विवश होकर वे संखिया के इंजेक्शन लेते थे, थोड़ा आराम पड़ता था। उन्हें ईयोसिनोफीलिया (Eosynophlia) हो गया था।

सन् 1948 से 1953 से तक अश्क दंपत्ति के जीवन में संघर्ष के वर्ष रहे। जुलाई सन् 1948 में पंचगनी होते हुए इलाहाबाद आ गए। यहाँ आकर ज्ञात हुआ कि मकानों की बड़ी विषम समस्या है। सामान अधिक होने के कारण उन्हें अतिरिक्त कठिनाई का सामना करना पड़ा। तेरह

बक्स तो केवल पुस्तकों के साथ ही बीबी बच्चे भी। यहाँ यह स्वर्गीय प्रेमचंद के बड़े पुत्र श्रीपतराय के साथ 14 हेस्टिंग्ज पर रहते रहे। यहीं 'नीलाभ प्रकाशन' गृह की व्यवस्था की जिससे उनके संपूर्ण साहित्यिक व्यक्ति को रचना और प्रकाशन दोनों दृष्टियों से सहज पथ मिला।''[12]

अश्क जी बीमारी के दिनों में भी लिखते रहे। जब वे अपने जीवन में अधिक उदास और अंदर में स्वस्थ रहते थे, तब वे लोगों को अधिक हँसाते थे। उन्हीं उदास क्षणों में वे हिंदी साहित्य और अपने इर्द-गिर्द के लोगों को हास्य रस प्रदान करते थे।

1.1.7 आकाशवाणी एवं चलचित्र जगत में -

सन् 1942 के शुरू में अश्क जी ने आल इंडिया में परामर्शदाता के रूप में नौकरी स्वीकार की। यहाँ पर वे पूरे तीन साल तक रहे, इसी दौरान उन्होंने 'कबीरदास', 'तुलसीदास', 'मर्यादा पुरूषोत्तम राम', 'भगवान बुद्ध', 'उर्मिला और निर्मला' आदि रेड़िओं नाटक लिखे। 'मर्यादा पुरूषोत्तम राम' का रेकार्ड बी. बी. सी. लंडन से भी ब्राडकास्ट किया गया था। इसके बाद अश्क जी ने सन् 1945 के आखिर में बंबई के फिल्म जगत के निमंत्रण स्वीकार कर वहाँ पर फिल्मों में लेखन का कार्य किया। फिल्मी जगत में अश्कजी दो वर्ष रहे। इन्हीं दो वर्षों के दरम्यान उन्होंने नीतिन बोस के फिल्म 'मजदूर' और बी. मित्र के फिल्म 'सफर' डायलाग के साथ-साथ संवाद निर्देशन का भी काम किया। इसी वर्ष के फिल्मों में 'मजदूर' के संवाद सर्वश्रेष्ठ समझे गए और 'सफर' भी 'बाक्स आफिस' पर हिट साबित हुई। साथ ही फिल्म 'मजदूर' और 'आठ दिन' नामक फिल्म पूर्तता भी हुई। मगर वास्तविकता की जानकारी जब अश्क जी को हुई तब वह अधिक कटु थी। अश्क जी ने एक जगह पर लिखा है कि मैं वहाँ पर अपनी प्रतिभा का वेश्या व्यवसाय कर रहा था। और इसी कटु अनुभव के कारण ही उन्होंने फिल्मी जगत को नमस्कार किया।

1.1.8 मृत्यु -

हिंदी साहित्य जगत के इस महान हस्ती की मृत्यु 19 जनवरी, 1996 के दिन इलाहाबाद स्थित 'स्वरूप रानी नेहरू' अस्पताल में हो गई। अश्क जी अपने जीवन में अंत तक संघर्ष करते रहे और 85 साल की उम्र में इस दुनिया से चले गए।

संघर्ष ही अश्क का दूसरा नाम है। एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में जन्म लेकर वे स्वाभिमान के प्रतीक रहे हैं। अश्क ने बचपन से ही संघर्ष किया है। घर में पिता का आतंक मार-पीट, झगड़ा, गाली-ग्लोज नित्य का ही तमाशा बन गया था। अश्क जी बचपन से ही स्वप्नजीवी थे। कभी अध्यापक, कभी लेखक, संपादक तो कभी वक्ता, वकील और अभिनेता डायरेक्टर आदि बनने के सपने देखा करते। बचपन की चिर अभिलाषा कुछ हद तक पूरी भी हुई मगर अंत में अपने-आप को उन्होंने साहित्य सृजन की सेवा में लगा लिया। अश्क जी एक सफल साहित्यिक बन गए। उन्होंने साहित्य सेवा कर अपना अक्षयी कीर्तिमान स्थापन कर दिया है। अश्क जी हिंदी साहित्य कोश में हमेशा चमकते रहेंगे।

1.1.9 व्यक्तित्व -

अश्क जी शरीर से दुबले पतले, छरहरे और घुँघराले बालवाले थे। कल्पना, मूड़, दैवी शक्ति, जन्मजात प्रतिभा को न मानते हुए जीवन के हर मोड़ को समझकर उन्होंने सही रास्ता पकड़ा था। कितने ही भटकावों से लड़कर उन्होंने अपने लेखक की रक्षा की है और जीवन में जो जो चाहा उसके लिए संघर्ष करते हुए उसे कम अधिक मात्रा में पाया।

अश्क जी एक नायक की तरह जिए हैं। पोशाक, चाल-ढाल, बात-चित, लबो-लहजा, हावभाव आदि सभी बातें उनमें एक नायक-सी रहती थी। उनका व्यक्तित्व हर स्थान पर अलग, असाधारण और भिन्न दिखाई देता था।

सुमित्रानंद पंत उनके बारे में कहते हैं - "वे अत्यंत परिश्रमशील, बहुमुखी, प्रतिभावान व्यक्ति हैं। और कला की अपूर्व परख रखते हैं। उनके गंभीर व्यवहार ज्ञान के साथ उनका बच्चों सा चंचल, भोला, दूसरों को अकारण छेड़कर रस लेने का स्वभाव उनकी प्रिय विशेषता है।"[13]

अश्क जी का जीवन एक खुली किताब ही है। उनमें और उनके नाटककर में कोई फर्क न था। उन्हें नाटकीयता, नाटकीय व्यक्ति, नाटकीय घटनाएँ, नाटकीय रंग बहुत पसंत था। उन्हें सीधा-साधा जीवन, भोला-भाला आदमी और साधारण घटना पसंद न थी।

अश्क जी को नाटक लिखने में जितनी खुशी होती है उतनी उसे खेलने में। यही कारण है कि वे नाटक लिखते ही नहीं थे बल्कि उस पर काम करते थे। वे नाटक लिखने और खेलने को अलग-अलग चीज नहीं मानते थे।

"आत्मविश्वास महत्वाकांक्षा का पूरक है। यह दोनों अश्क में है। आत्म प्रंशसा से भी उन्हें कोई हिचक नहीं। यह सब संघर्ष और साधना से पैदा है। वे स्वाभिमानी हैं। अनाचारों के विरूद्ध लड़ना, अधिकारों के लिए संघर्ष करना इनके व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य है।"[14]

अश्क जी हर प्रकार का लिबास पहनना पसंद करते थे। धोती, कूर्ता और जाकेट से लेकर सूट-बूट तक सभी प्रकार के लिबास उन्हें पसंद थे। कभी-कभी वे कौशल्या जी की साड़ी पहने मल पर घूमते थे। कभी-कभी वे सीटी बजाते, आवाजे कसते हुए सिनेमा देखते या हाथ में घड़ी लिए घूमते थे। उनका खाना-पीना बहुत सीधा-साधा पर नियमित था।

संघर्षमय जीवन में हमेशा वे एक नायक की तरह पूरा जीवन जिए हैं। भैरव प्रसाद गुप्त का उनके बारे में कथन है - "उनके जीवन और व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह नायकत्व ही है।"[15]

अश्क के व्यक्तित्व में चंचलता भी थी। अश्क जी के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए श्रीमती कौशल्या अश्क ने लिखा है - "अश्क जी का स्वभाव ऐसे शांतिप्रिय व्यक्ति का-सा नहीं, जो पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर उस पर डेरा डाल दे, बल्कि ऐसे चंचल राही-सा है जिसको कभी पहाड़ के शिखर पसंद हैं, कभी गहरी घाटियाँ, जो कभी जनसंकुल नगरों को पसंद करता है और कभी निर्जन वीरानों में जा रमता है। पराकाष्ठाएँ उसे पसंद हैं, कोई एक सीमा-रेखा और मध्य का मार्ग उसे रूचिकर नहीं।"[16]

अश्क जी बहुत जिद्दी भी थे। जान बुझकर अगर कोई अपनी उपेक्षा करने का प्रयत्न कर रहा है तो वे विरोधी को बात मनवाकर उसे झूका न ले तब तक चैन से नहीं बैठते थे। उनके स्वभाव पर प्रकाश डालते हुए कृष्णचंद्र कहते हैं - "मैंने ऐसा जिद्दी, मुस्तालिक मिजाज धुन का पक्का साहित्यकार बहुत कम देखा है।"[17]

अश्क जी का चरित्र पढ़ने से अथवा जो उनके निकट गया है, वे सब उनमें परिश्रमी, बहुमुखी, प्रतिभाशाली और कला की अपूर्व आस्था रखनेवाले, गंभीर ज्ञान के साथ बच्चों की चंचलता, भोलेपन और दूसरों को अकारण छेड़कर रस लेने का स्वभाव आदि प्रिय विशेषताएँ पायेंगे, उनसे मिले हुए या उनके जीवन चरित्र को समझ पढ़नेवाले सभी यही कहेंगे कि "ही इज बेस्ट अँड ग्रेट' सभी दृष्टि में वे ग्रेट थे।

1.2 कृतित्व -

अश्क जी बचपन से ही कविता करने या नाटक देखने में रुचि रखते थे। पाठशाला में लिखी 'तुफाने अश्क' ये पद्यरचना पहली बार सन् 1926 में प्रकाशित हुई।

साहित्यकार का मुख्य दायित्व यह होता है कि वह युग का पथ-प्रदर्शन करें और उस तरह के साहित्य का निर्माण करें। अश्क जी ने भी समाज की विभिन्न समस्याओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। साहित्य के बहुविध अंगों पर उन्होंने प्रकाश डाला है। साहित्य की सभी विधाओं में उन्होंने सफलता पाई है। आज हिंदी साहित्य के उच्चकोटी के साहित्यकारों में उनका नाम लिया जाता है। उनका साहित्य इस प्रकार है -

1.2.1 नाटक -

अ. क्र.	*नाटक का नाम*	*प्रकाशन वर्ष*
1.	जय-पराजय	सन् 1937
2.	स्वर्ग की झलक	सन् 1938
3.	छटा बेटा	सन् 1940
4.	पैंतरे	सन् 1950
5.	अलग-अलग रास्ते	सन् 1953
6.	अंजो दीदी	सन् 1954
7.	भँवर	सन् 1955
8.	कैद और उड़ान	सन् 1953
9.	बड़े खिलाड़ी	सन् 1961

1.2.2 एकांकी -

1. मुखड़ा बदल गया
2. पच्ची श्रेष्ठ एकांकी
3. पर्दा उठाओं : पर्दा गिराओं
4. साहब को जुकाम है
5. तूफान से पहले
6. चरवाहे
7. देवताओं की छाया में
8. अंधी गली
9. लक्ष्मी का स्वागत
10. अधिकार का रक्षक
11. सूखी डाली
12. कामदा
13. मैमूना
14. नया-पुराना
15. बहने
16. चिलमन
17. चुंबक
18. तौलिये
19. पक्का गाना
20. कइसा साब : कइसी आया
21. बतसिया
22. कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन
23. मस्केबाजों का स्वर्ग

1.2.3 ***उपन्यास*** -

1. गिरती दीवारें
2. शहर में घूमता आईना
3. एक नन्हीं किंदील
4. निमिषा
5. बाधों न नाव इस ठाँव
6. पलटती धारा
7. छोड़े बड़े लोग
8. चंद्रा
9. गर्मराख
10. एक रात का नरक
11. चेतन-संक्षिप्त
12. बड़ी-बड़ी आँखें
13. संघर्ष का सत्य
14. पत्थर अल पत्थर
15. सितारों का खेल
16. नन्हीं-सी लौ

1.2.4 ***कहानी*** -

1. सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ
2. छींटे
3. उबाल और अन्य कहानियाँ
4. काले साहब
5. जुदाई की शाम का गीत

6. बैंगन का पौधा
7. आकाशचारी
8. कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल
9. अश्क की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
10. पलंग
11. निशानियाँ
12. पिंजरा
13. दो धारा
14. रौबदाब
15. वासना के स्वर

1.2.5 ***काव्य -***

1. स्वर्ग एक तलघर है
2. दीप जलेगा
3. अदृश्य नदी
4. पीली चोंचवाले चिड़िया का नाम
5. सड़कों के ढले साये
6. चाँदनी रात और अजगर
7. बरगद की बेटी

1.2.6 ***संस्मरण, जीवनी और लेख -***

1. ज्यादा अपनी कम परायी
2. बेदी : मेरा हरदम, मेरा दोस्त
3. चेहरे - अनेक (एक से पाँच खंड)
4. मण्टो : मेरा दुश्मन

5. आस्माँ और भी है
6. रेखाएँ और चित्र
7. परतों के आर-पार
   (जगत प्रसिद्ध कथाकार ओ हेनरी जीवन पर आधारित)
8. कुछ दूसरों के लिए

1.2.7 अनुवाद -

1. ये आदमी : ये चूहे - स्टीन बैक के प्रसिद्ध उपन्यास
   'आव माइस एंड मैन' का अनुवाद
2. रंग-साज-रूस के प्रसिद्ध कहानीकार ऐंटन चेखव के लघु उपन्यास।
3. लंबे दिन की यात्रा : रात में (नाटक)।
4. हिज एकसेलेन्सी - अमर कथाकार दास्तवस्की के लघु उपन्यास
   'डर्टी स्टोरी' का हिंदी अनुवाद।
5. अभिशप्त (नाटक)

1.2.8 संपादक, संकलन -

1. प्रतिनिधि एकांकी
2. रंग एकांकी
3. संकेत
4. तूफानी लहरों में हँसता माँझी
5. उदास फूल की मुस्कान

1.2.9 आलोचना -

1. हिंदी कहानियाँ और फैशन
2. अन्वेषण की सहयात्रा

1.2.10 अश्क के जीवन का साहित्य से संबंध -

अश्क के साहित्य पर उनके जीवन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। जिस समाज में उनके व्यक्तित्व का विकास हुआ है उसी परिवेश को उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान दिया है। यथार्थवादी साहित्यकार जीवन के अनेकविध रूपों से परिचित होता है। अश्क ने भी जीवन के सुख-दुःख, कर्म-अकर्म को अपने साहित्य में इस प्रकार चित्रित किया है कि वह जीवन के प्रति न्याय कर सके।

अश्क जी स्वयं मध्य वर्ग के थे। इसी कारण उन्होंने मध्य वर्ग के लोगों की वेदनाओं को भली भाँति जाना। 'मैं किसके लिए लिखता हूँ' शीर्षक निबंध में उन्होंने लिखा है - मैं किसान मजदूरों के बारे में ज्यादा नहीं लिख सका। मैं निम्न-मध्य वर्ग में पैदा हुआ, पला और बढ़ा। इसी वर्ग का चरित्र-चित्रण मैंने अपनी कृतियों में अधिकांशता किया है। बिना किसी व्यक्ति अथवा वर्ग का पूरा ज्ञान प्राप्त किए, साहित्य सर्जना मेरे ख्याल में बद-दयानती है। लेखक जहाँ है, जिस वर्ग में है, जिस प्रदेश में है, जिसका पूरा ज्ञान उसे प्राप्त है, उसी वर्ग, समाज और प्रदेश की जन कल्याण और जनसुख के हेतु उसे अपने साहित्य में चित्रित करना चाहिए, ऐसी मेरी धारणा है। यदि लेखक किसानों और मजदूरों से उठा है अथवा उनमें रहता है तो उन्हें छोड़कर उच्च वर्ग का चित्रण उसके लिए गलत होगा। इसी तरह उच्च वर्ग के साहित्यिक के लिए बिना निम्न वर्ग की परिस्थितियों का पूरा ज्ञान किए, केवल बौद्धिक सहानुभूति के बल पर उनका चित्रण करना ठीक न होगा और उसके साहित्य में वह गुण न आएगा जो अनुभूति के सच्चे और खरेपन से पैदा होता है।''[18]

अश्क के पूरे साहित्य में हमें मध्य वर्ग का चित्रण नजर आता है। उनके कथा साहित्य में भारतीय मध्य वर्ग का व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन ही अधिक है। उनकी कहानियों में भी उनके सामाजिक चिंतन की गहरी छाप दिखाई देती है। उनके उपन्यास में भी सामाजिक चित्रण है। कविता और एकांकियों में मध्य वर्ग का चित्रण है।

अश्क जी के साहित्य में युग जीवन का चित्रण नजर आता है। जो देखा है, भोगा है उस मध्यवर्गीय जीवन का संघर्ष ही उनकी रचनाओं का केंद्रीय विषय रहा है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अश्क जी का बचपन अत्यंत साधारण परिवार में मुसीबतों का सामना करते हुए बिताया है। शराबी और बेपरवाह पिता और आर्थिक तंगी से मारी माता के कारण शिक्षा के साथ रोजी-रोटी के साथ उन्हें दर-दर की ठोकर खानी पड़ी थी। यक्ष्मा जैसे रोग से ग्रस्त होने पर भी वे साहित्य सृजन करते रहे। पत्नी कौशल्या का बीमारी अवस्था में अश्क का साथ देकर उनके जीवन के पथ को प्रशस्त करने में बहुत बड़ा योगदान रहा है। इन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना स्वाभिमान जीवंत रखा था।

आर्थिक और समाजिक समस्याओं का पग-पग पर संघर्ष करते हुए मृत्यु तक एक सफल साहित्यिक के रूप में उन्होंने हिंदी जगत में अपना अलग स्थान प्रस्थापित किया। इसी कारण उनका व्यक्तित्व दिलचस्प और बहुगुणों से युक्त दिखाई देता है। वे दिलचस्प, प्रतिभावान, अग्रणी साहित्यकार, प्रख्यात उपन्यासकार, कहानीकार एवं रंगमंच की दृष्टि से सफल नाटककार थे। अश्क जी ने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी निर्बाध गति से चलाई है।

इस प्रकार साहित्य के हर क्षेत्र पर प्रकाश डालकर उन्होंने अपने कृतित्व की पहचान दी है। यही कारण है कि वे बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार साबित हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व, पृ. 19
2. वही, पृ. 31
3. कौशल्या अश्क, साक्षात्कार और विचार, पृ. 156
4. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व, पृ. 37
5. वही, पृ. 238
6. वही, पृ. 236
7. कौशल्या अश्क, नाटककार अश्क, पृ. 46
8. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व, पृ. 58
9. वही, पृ. 84
10. वही, पृ. 494
11. वही, पृ. 163
12. अहिबरन सिंह, अश्क का कथा साहित्य, पृ. 12
13. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व, पृ. 22
14. चंद्रेश्वर कर्ण, उपन्यासकार अश्क, पृ. 4
15. कौशल्या अश्क, नाटककार अश्क, पृ. 462
16. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगिन व्यक्तित्व, पृ. 116
17. वही, पृ. 58
18. उपेंद्रनाथ अश्क, ज्यादा अपनी, कम परायी, पृ. 25